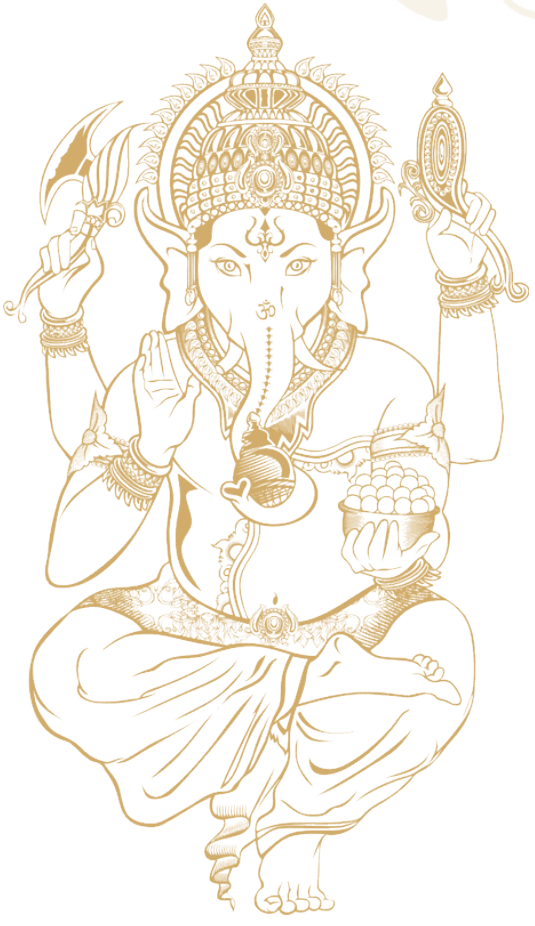

Mr.

28 Oct 2025

01:44 AM

Sehore

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119963801**

तिथि 28/10/2025 **समय** 01:44:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Sehore **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:07
अक्षांश 23:12:00 उत्तर **रेखांश** 77:08:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:28 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	03:48:17 घं
वेलान्तर	00:16:16 घं
सूर्योदय	06:24:16 घं
सूर्यास्त	17:46:17 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	कार्तिक
पक्ष	शुक्ल
तिथि	6
नक्षत्र	पूर्वाषाढ़ा
योग	सुकर्मा
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	वानर
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	धा-धर्मेन्द्र
पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
होरा	शनि
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

शुक्र 10वर्ष 8मा 14दि
शुक्र
28/10/2025
12/07/2036

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	28/10/2025
राहु	12/09/2026
गुरु	13/05/2029
शनि	12/07/2032
बुध	13/05/2035
केतु	12/07/2036

योगिनी

सिद्धा 3वर्ष 8मा 29दि
सिद्धा
28/10/2025
27/07/2029

	00/00/0000
	00/00/0000
	28/10/2025
पिंगला	26/01/2026
धान्या	27/08/2026
भ्रामरी	07/06/2027
भद्रिका	27/05/2028
उल्का	27/07/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			05:45:28	सिंह	मघा	2	केतु	राहु	---	0:00			
सूर्य			10:27:01	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	नीच राशि	0.85	भ्रातृ	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			19:31:44	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	राहु	सम राशि	1.45	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			00:17:45	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	चंद्र	स्वराशि	1.31	कलत्र	भ्रातृ	साधक
बुध			04:04:44	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	शनि	सम राशि	1.10	मातृ	ज्ञाति	वध
गुरु			00:34:26	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	मंगल	उच्च राशि	0.98	ज्ञाति	धन	साधक
शुक्र			23:09:13	कन्या	हस्त	4	चंद्र	सूर्य	नीच राशि	1.45	आत्मा	कलत्र	विपत
शनि	व		01:46:44	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.04	पुत्र	आयु	साधक
राहु	व		22:50:20	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु	व		22:50:20	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	जन्म

लग्न-चलित

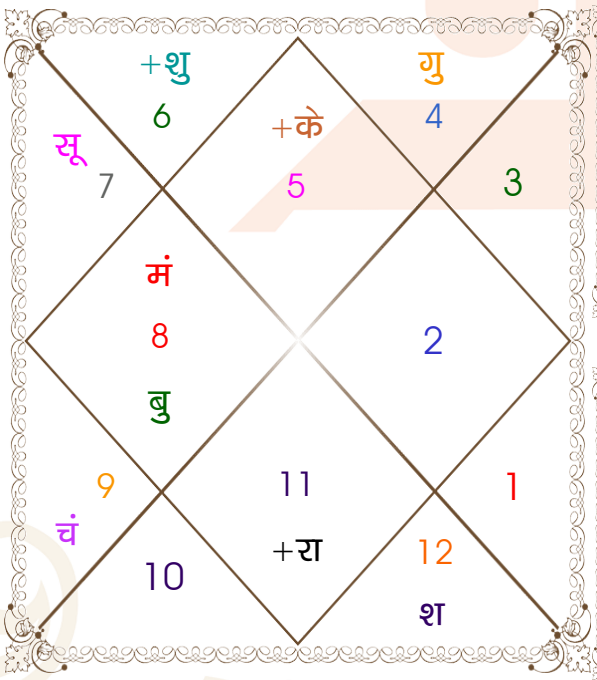

चन्द्र कुंडली

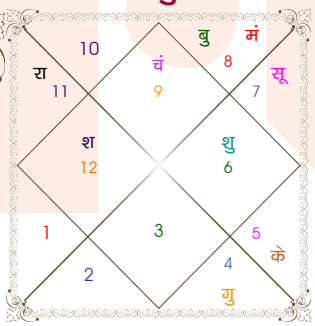

नवमांश कुंडली

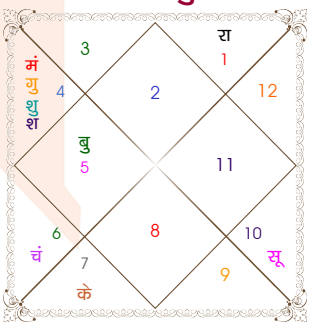

सर्वाष्टकवर्ग

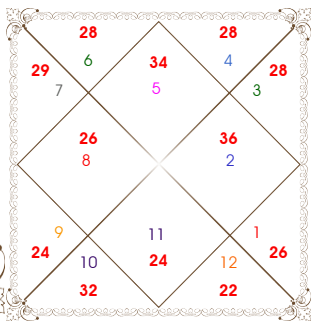

दशमांश कुंडली

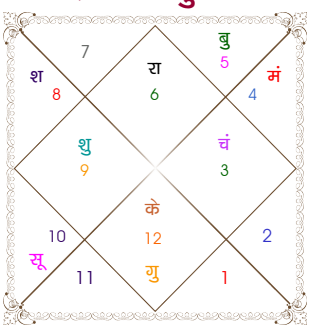

नक्षत्रफल

आप पूर्वाषाढा नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण मनुष्य, नाड़ी मध्य, योनि वानर, वर्ग सर्प तथा वर्ण क्षत्रिय होगा। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ध" या "धा" अक्षर से होगा यथा- धनसिंह।

आपका सम्पूर्ण जीवन सुख तथा प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा तथा समस्त अन्य जनों के साथ अत्यन्त ही मित्रतापूर्ण व्यवहार रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही आप हमेशा मधुर एवं प्रिय वाणी का उपयोग अपने सम्भाषण में करेंगे। अतः सभी लोग आपसे सम्मान तथा आदर की प्राप्ति करेंगे। आप चरित्र से उत्तम रहेंगे तथा सभी लोग आपके सचरित्र की प्रशंसा करेंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार की धन सम्पतियों से भी आप सुशोभित रहेंगे तथा बार बार जल पीने की आपकी प्रवृति रहेगी।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चञ्चद्वाग्विलासः सुशीलः।
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बार बार पानी पीने की इच्छा करने वाला, भोगी, मृदु तथा प्रिय बोलने वाला सुशील एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आपकी सहधर्मिणी आपके लिए अत्यन्त ही आनन्दकारी तथा सुखप्रदाता प्रतीत होंगी। इससे आपका गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा। समाज में आपको यथोचित आदर सत्कार की प्राप्ति होगी तथा समाज के सभी वर्गो के मध्य आप प्रिय रहेंगे। मित्रता करने के प्रति आप अत्यन्त ही सजगता का परिचय देंगे तथा प्रगाढ़ एवं स्थिर मित्रता करना ही पसन्द करेंगे। इससे आपके मित्रता का क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं रहेगा तथा जो भी मित्र होंगे वे सभी सर्वगुण सम्पन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप स्थिर वैभवादि से भी सम्पन्न रहेंगे।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढ़सौहृदश्च जलदैवे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक आनन्ददायिनी अभीष्ट स्त्री से युक्त, मान सम्मान से युक्त और सुस्थिर मित्र तथा सम्पत्ति वाला होता है।

आप दूसरे व्यक्तियों की भलाई करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे तथा स्वजनों तथा सम्बन्धियों के अतिरिक्त अपरिचित लोगों की मदद करने तथा उनके परोपकार के लिए कार्य करने को भी सर्वथा यत्नशील रहेंगे। इससे आपकी सामाजिक ख्याति प्रचुर मात्रा में रहेगी। साथ ही आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति भी रहेंगे तथा आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भाग्य बल से सिद्ध होंगे। आप तीव्र बुद्धि से भी युक्त

रहेंगे तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने में सफल रहेंगे। साथ ही विविध प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने की योग्यता भी आप में विद्यमान रहेगी।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढ़ाभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपरिचित, कामी, उपकार करने वाला, भाग्यवान, सभी जनों का प्रेमी, और सभी विषयों का विलक्षण पंडित होता है।

आप अच्छे आचार तथा विचारों के पुरूष होंगे तथा समाज के सभी लोग आपकी सज्जनता तथा विद्धता से प्रभावित होकर आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपका स्वभाव शान्त रहेगा तथा विपतिकाल में भी आप घबरायेंगे नहीं और न ही उत्तेजित होंगे अपितु शान्ति एवं धैर्य से सर्वपरिस्थितियों का सामना करके उनका समाधान करेंगे।

पूर्वाषाढ़भवो विकारचरितो मानी सुखी शान्त धीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न बालक सच्चरित्र, सम्माननीय, सुखी, शान्त तथा बुद्धिमान होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

धनु राशि में पैदा होने के कारण आपका कंठ तथा मुख दीर्घाकार होगा तथा दांत, ओठ एवं कान भी स्थूलता से युक्त रहेंगे। आपकी भुजाएं पुष्ट तथा स्थूल होंगी। आप अपने पैतृक धन से युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपके अर्न्तमन में दानशीलता का भाव भी नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल आप अपनी इस प्रवृति का समाज में अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करते रहेंगे। आपकी लेखन कर्म के प्रति भी गहन रूचि रहेगी तथा इसी क्रम में आप कविता लेखन में ख्याति प्राप्त कर सकेंगे। शरीर से आप पूर्ण बलशाली रहेंगे। भाषण देने की कला में आप अत्यन्त ही निपुणता का प्रदर्शन करेंगे तथा अपने ओजस्वी भाषणों से जनसामान्य को प्रभावित तथा आकर्षित करने में समर्थ होंगे। आप कई प्रकार के कार्यों

को करने में भी सक्षम रहेंगे। प्रकृति से आप गम्भीर रहेंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा निष्ठा का भाव विद्यमान रहेगा। फलतः आप को धर्मशास्त्र का अच्छा ज्ञान रहेगा। अपने बन्धुजनों से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे। आप प्रेम तथा समानता के व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक किसी भी कार्य में सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपके नेत्र गोल तथा सुन्दरता से युक्त रहेंगे। साथ ही आपके हाथ तथा कन्धों की लम्बाई भी सामान्य से अधिक प्रतीत होगी। उम्र के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव आ सकता हैं। आप जल के समीप रहने तथा भ्रमण करने के लिए अत्यन्त ही इच्छुक रहेंगे तथा इस सुअवसर की प्राप्ति के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। आपकी शरीर की अस्थियां भी पुष्ट रहेगी एवं मन हमेशा प्रसन्नता से युक्त रहेगा। आपके मन में कृतज्ञता का भाव भी व्याप्त होगा तथा किसी अन्य के द्वारा उपकृत होने पर उसका हृदय से आभार प्रकट करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक उद्यमी पुरूष होंगे तथा सर्वदा किसी न किसी कार्य में तत्पर रहेंगे तथा अपने को व्यस्त रखेंगे। बोलने में आप अत्यन्त ही चतुराई का प्रदर्शन करेंगे तथा स्ववाक्चातुर्य से अपने कार्यों को सिद्ध करेंगे। आप एक त्यागी पुरूष होंगे तथा अवसरानुकूल इस का प्रदर्शन भी करेंगे। शारीरिक रूप से आप मध्यम कद से युक्त रहेंगे। आप एक शूरवीर व्यक्ति होंगे तथा निर्भयता पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को पूर्ण करेंगे। आप उच्चाधिकारियों तथा सम्पन्न व्यक्तियों के मध्य लोकप्रिय रहेंगे तथा उनसे पूर्ण आदर एवं सम्मान की भी आपको प्राप्ति होगी।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोळरिहन्ता साम्नैकसाध्योळश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप नाना प्रकार की कलाओं को जानने वाले होंगे तथा सादा जीवन उच्च विचार को अपनाकर जीवन यापन करेंगे। किसी भी बात को आप स्पष्ट रूप से कहने में कोई भी हिचकिचाहट का अनुभव नहीं करेंगे तथा अपने विचारों को स्पष्ट रूप से

अन्य जनों के समक्ष प्रकट करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपनी आय को मध्यनजर रखते हुए काफी सोच विचार कर व्यय करेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर तथा पुष्टता को प्राप्त होंगे तथा अपने परिवार में आप श्रेष्ठ समझे जाएंगे। समस्त परिवारिक जन आपको यथायोग्य स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त चित्रकारी या इंजीनियरिंग आदि के क्षेत्र में आप विशेष ख्याति अर्जित कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप स्वभाव से निर्भय प्रवृति के पुरूष रहेंगे तथा सत्य के प्रति आपकी दृढ निष्ठा रहेगी। अतः जीवन में यत्नपूर्वक इसका पालन करने में तत्पर रहेंगे। आप स्थिर कर्मों के करने के लिए विशेष रूचि का भी प्रदर्शन करेंगे। आप मन में सब के प्रति प्रेम तथा स्नेह का भाव रखेंगे। आप को पत्नी के रूप में सुन्दर सुशील तथा गुणवान स्त्री की प्राप्ति होगी जिससे सांसारिक जीवन सुखमय रहेगा। साथ ही देखने में आप स्थूल होंगे।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप समस्त सत्वगुणों से युक्त रहकर समाज में पूर्ण रूप से सम्माननीय तथा लोकप्रिय व्यक्ति रहेंगे। अपने बन्धुओं में आप निश्चित रूप से श्रेष्ठ रहेंगे। आप धार्मिकता की भावना से भी युक्त रहेंगे तथा देवता, ब्राहमण एवं गुरूजनों के प्रति विशिष्ट श्रद्धा एवं सेवा का भाव प्रदशित करेंगे परन्तु आप में सहनशीलता के भाव का अभाव रहेगा। अतः इससे कई बार आपको परेशानी या कष्ट का सामना करना पड़ेगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुवर्गेक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति असीम श्रद्धा तथा पूजा का भाव रखने वाले पुरूष होंगे साथ ही आप अन्य कार्यों तथा कलाओं के विषय में भी जानकारी रखने वाले होंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी तथा समस्त कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। आपकी शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त आप अन्य

जनों को सुख प्रदान करने वाले भी होंगे।

आप देखने में सुन्दर स्वरूप से युक्त दौरान आपकी- मन में दानशीलता की भावना सर्वथा विद्यमान रहेगी। आप एक बुद्धिमान पुरूष भी होंगे तथा हमेशा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए यत्नशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आप एक श्रेष्ठ एवं सम्माननीय विद्वान के रूप में भी प्रसिद्ध रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

वानर योनि में पैदा होने के कारण आपके स्वभाव में कभी कभी चंचलता के भाव की प्रबलता रहेगी। मिष्ठान के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका भक्षण करेंगे। आप धन की प्राप्ति के लिए अत्यन्त ही व्याकुलता की अनुभूति करेंगे तथा इसको प्राप्त करने के लिए आतुरता का प्रदर्शन करेंगे। आपका अन्य जनों के साथ विवाद आदि भी होता रहेगा। आप में काम चेष्टा की वृति भी अधिक मात्रा में विद्यमान रहेगी। साथ ही आप उत्तम गुणों से युक्त सन्तति से भी युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक साहसी तथा निर्भय पुरूष रहेंगे तथा निर्भीकता से अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के

लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोड़कर सामान्य रूप से मधुर ही रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा तथा अन्य शुभ कार्यों में असफलता की ही प्राप्ति हो रही हश तो ऐसे समय में आपको आने इष्ट देव हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही

सोना, पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के 16000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलों में न्यूनता होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।